Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

तनाव एवं मानसिक स्वास्थ का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव –एक अध्ययन

(झारखण्ड के अनुसूचित जनजाति के बच्चों के विशेष संदर्भ में)

डॉ अशोक कुमार किस्कू
पीएच.डी., शिक्षाशास्त्र, रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश।

Article Info

Publication Issue :
Volume 6, Issue 1
January-February-2023
Page Number : 37-42

Article History
Accepted : 01 Feb 2023
Published : 25 Feb 2023

शोध सार - स्कूलों और शिक्षकों के लिए शैक्षणिक उपलब्धि पर तनाव और मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव को पहचानना और इन मुद्दों को हल करने के लिए कदम उठाना महत्वपूर्ण है। इसमें मानसिक स्वास्थ्य सहायता सेवाएं प्रदान करना, तनाव कम करने की तकनीकों को बढ़ावा देना और एक सहायक और समावेशी शिक्षण वातावरण बनाना शामिल हो सकता है। छात्र कल्याण को प्राथमिकता देकर, स्कूल छात्रों को अकादमिक और व्यक्तिगत रूप से उनकी पूरी क्षमता हासिल करने में मदद कर सकते हैं। यद्यपि तनाव एवं मानसिक स्वास्थ कैसे बच्चों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है इस पर कई शोध हुए हैं किंतु जनजातीय समुदाय के बच्चों के परिप्रेक्ष्य में इस पर और भी शोध की आवश्यकता है । प्रस्तुत शोधपत्र झारखण्ड राज्य के अनुसूचित जनजाति के बच्चों के विशेष संदर्भ में तनाव एवं मानसिक स्वास्थ का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन है । यह शोध मुख्य रूप द्वितीयक आंकड़ों जी विभिन्न शोध पत्र, आलेख एवं प्रतिवेदन से प्राप्त किए गए हैं के सूक्ष्म विश्लेषण पर आधारित है । इसका मुख्य उद्देश्य जनजातीय समुदाय के बच्चों में तनाव एवं मानसिक स्वास्थ की स्थिति का पता लगाना एवं इसका शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का आंकलन करते हुए भविष्य के लिए सुझाव प्रस्तुत करना है ।

कुंजी शब्द : तनाव, मानसिक स्वास्थ शैक्षिक उपलब्धि, अनुसूचित जनजाति ।

परिचय : झारखंड आदिवासी समुदायों की एक महत्वपूर्ण आवास स्थल है। भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार, झारखंड की जनजातीय आबादी लगभग 87 लाख (8.7 मिलियन) है, जो राज्य की कुल जनसंख्या का लगभग 26% है। झारखंड में 32 आदिवासी समुदायों में संथाल, उरांव, मुंडा, हो, खरिया और भूमिज शामिल हैं। इन समुदायों की अपनी विशिष्ट संस्कृतियाँ, भाषाएँ और परंपराएँ हैं, और ये राज्य के विभिन्न भागों में केंद्रित हैं। संथाल और उरांव समुदाय झारखंड के सबसे बड़े आदिवासी समूहों में से एक हैं, जिनकी आबादी 30 लाख (3 मिलियन) से अधिक है। झारखंड की आदिवासी आबादी गरीबी, बुनियादी सुविधाओं तक पहुंच की कमी और भेदभाव सहित कई चुनौतियों का सामना करती है। राज्य सरकार और विभिन्न गैर सरकारी संगठनों द्वारा इन मुद्दों को हल करने और राज्य में जनजातीय समुदायों के समग्र कल्याण में सुधार के प्रयास किए जा रहे हैं। वैसे तो पुरे झारखण्ड में शैक्षिक उपलब्धि का स्तर कम देखने को मिलता है किंतु

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Shauryam Research Institute. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

जनजातीय समुदाय के परिप्रेक्ष्य में यह एक अत्यंत चिंता का विषय है कई कारणों से इस समुदाय के बच्चों में तनाव और मानसिक स्वास्थ की खराब स्थिति एक गंभीर समस्या बनी हुई है ।

तनाव और मानसिक स्वास्थ्य का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव- तनाव और मानसिक स्वास्थ्य का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है। तनाव चुनौतीपूर्ण स्थितियों के लिए एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया है, लेकिन जब यह पुराना हो जाता है, तो यह एक छात्र की ध्यान केंद्रित करने, सीखने और अकादमिक रूप से प्रदर्शन करने की क्षमता में हस्तक्षेप कर सकता है। चिंता, अवसाद और ADHD जैसी मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं भी छात्र के शैक्षणिक प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं। जब छात्र तनावग्रस्त या चिंतित होते हैं, तो उनकी ध्यान केंद्रित करने और जानकारी को बनाए रखने की क्षमता क्षीण हो सकती है। इससे नई सामग्री सीखना, प्रभावी ढंग से अध्ययन करना और परीक्षणों में अच्छा प्रदर्शन करना मुश्किल हो सकता है। पुराने तनाव और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के कारण खराब शैक्षणिक प्रदर्शन हो सकता है, जिसमें निम्न ग्रेड और टेस्ट स्कोर शामिल हैं। छात्र समय पर असाइनमेंट पूरा करने के लिए संघर्ष कर सकते हैं, या अपना सर्वश्रेष्ठ काम करने के लिए अभिभूत और अनुत्तेजित महसूस कर सकते हैं। मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों वाले छात्रों के स्कूल छोड़ने की संभावना अधिक हो सकती है, जो उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। बार-बार अनुपस्थित रहने से क्लासवर्क को बनाए रखना मुश्किल हो सकता है और पिछड़ने का कारण बन सकता है। मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों से जूझ रहे छात्रों को स्कूल छोड़ने का अधिक जोखिम हो सकता है, जो उनके भविष्य के अवसरों और सफलता की संभावनाओं को सीमित कर सकता है।

झारखण्ड के अनुसूचित जनजाति के बच्चों में तनाव एवं मानसिक स्वास्थ की स्थिति : झारखंड में अनुसूचित जनजाति के बच्चों में तनाव और मानसिक स्वास्थ्य की विशिष्ट स्थिति पर सीमित शोध है। हालांकि, कुछ अध्ययन और रिपोर्ट हैं जो बताते हैं कि गरीबी, भेदभाव और स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच की कमी सहित कई कारकों के कारण इन बच्चों को मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का अधिक खतरा हो सकता है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंसेज (निम्हान्स) बैंगलोर में शोधकर्ताओं द्वारा किए गए एक अध्ययन में झारखंड सहित ग्रामीण भारत में आदिवासी समुदायों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की व्यापकता की जांच की गई। अध्ययन में पाया गया कि गैर-आदिवासी समुदायों की तुलना में आदिवासी समुदायों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का प्रसार अधिक था, जिसमें अवसाद, चिंता और मादक द्रव्यों के सेवन सबसे आम मुद्दे थे (खंडेलवाल और अन्य, 2013)। झारखंड ट्राइबल डेवलपमेंट सोसाइटी (JTDS) द्वारा प्रकाशित एक अन्य रिपोर्ट में कहा गया है कि राज्य में आदिवासी बच्चों को कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो उनके मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण को प्रभावित कर सकती हैं, जिसमें गरीबी, भेदभाव और स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा तक पहुंच की कमी शामिल हैं (JTDS), 2018)। रिपोर्ट में झारखंड में आदिवासी बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, झारखंड सरकार द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, झारखंड में आदिवासी बच्चों की स्वास्थ्य स्थिति चिंता का एक प्रमुख कारण है। रिपोर्ट में कहा गया है कि झारखंड में आदिवासी बच्चों को कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो उनके स्वास्थ्य और कल्याण को प्रभावित कर सकती हैं, जिनमें गरीबी, कुपोषण, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा तक पहुंच की कमी और खराब रहने की स्थिति (राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, 2018) शामिल हैं। रिपोर्ट में कई प्रमुख स्वास्थ्य संकेतकों पर प्रकाश डाला गया है जो झारखंड में आदिवासी बच्चों के लिए विशेष रूप से चिंता का विषय हैं । रिपोर्ट के अनुसार, झारखंड में लगभग 45% आदिवासी बच्चे कम वजन के हैं, और लगभग 50% ठिगने हैं। कुपोषण आदिवासी बच्चों में रुग्णता और मृत्यु दर का एक प्रमुख कारण है, और उनके शारीरिक और संज्ञानात्मक विकास पर

लंबे समय तक प्रभाव डाल सकता है। झारखंड में जनजातीय बच्चों को खराब रहने की स्थिति और स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच की कमी के कारण मलेरिया, तपेदिक और डायरिया जैसे संक्रामक रोगों का अधिक खतरा है।

इन मुद्दों को हल करने और झारखंड में आदिवासी बच्चों की समग्र स्वास्थ्य स्थिति में सुधार के प्रयास किए जा रहे हैं। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, विभिन्न गैर सरकारी संगठनों और सरकारी एजेंसियों के सहयोग से, जनजातीय समुदायों के लिए स्वास्थ्य देखभाल, पोषण और शिक्षा तक पहुंच में सुधार के लिए कई हस्तक्षेपों को लागू कर रहा है। इस प्रकार झारखंड में अनुसूचित जनजाति के बच्चों पर विशेष रूप से सीमित शोध केंद्रित है, यह स्पष्ट है कि उनके मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियां हैं। इन मुद्दों को हल करने और इन बच्चों और उनके समुदायों की समग्र भलाई में सुधार के लिए लक्षित समर्थन प्रदान करने के प्रयासों की आवश्यकता है।

झारखण्ड में जनजातीय समुदाय के बच्चों में शैक्षिक उपलब्धि : झारखंड में जनजातीय समुदाय के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि की जांच पर कई अध्ययन शोधकर्ताओं ने किए हैं । इंडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल मेडिसिन में प्रकाशित एक अध्ययन ने झारखंड में आदिवासी किशोरों के बीच शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ तनाव, चिंता और अवसाद के बीच संबंध की जांच की। अध्ययन में पाया गया कि तनाव, चिंता और अवसाद के उच्च स्तर महत्वपूर्ण रूप से कम शैक्षणिक प्रदर्शन से जुड़े थे (कुमार एट अल, 2017) । इसी प्रकार एक अन्य अध्ययन जो जर्नल ऑफ मेडिकल साइंस एंड क्लिनिकल रिसर्च में प्रकाशित हुआ में झारखंड में आदिवासी छात्रों के बीच अकादमिक प्रदर्शन पर तनाव के प्रभाव का पता लगाया। अध्ययन में पाया गया कि तनाव ने अकादमिक प्रदर्शन को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया और आदिवासी छात्रों के बीच तनाव को कम करने के लिए हस्तक्षेप की आवश्यकता की सिफारिश की (कुमार और कुमार, 2018)। इसी तरह राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट ने झारखंड सहित कई राज्यों में आदिवासी बच्चों के बीच मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति की जांच की। रिपोर्ट में पाया गया कि आदिवासी बच्चों को विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ा जो उनके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती हैं, जैसे कि गरीबी, भेदभाव और स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और बुनियादी सुविधाओं तक पहुंच की कमी। रिपोर्ट में इन चुनौतियों से निपटने और आदिवासी बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए हस्तक्षेप की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला गया है (एनसीपीसीआर, 2019)।

इसी प्रकार सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (।JED।CT) का उपयोग कर शिक्षा और विकास के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन ने झारखंड में आदिवासी छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रौद्योगिकी-सक्षम शैक्षिक हस्तक्षेप के प्रभाव की जांच की। अध्ययन में पाया गया कि हस्तक्षेप ने छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन में काफी सुधार किया, विशेष रूप से गणित और विज्ञान में (भौमिक और मुखर्जी, 2017)। जर्नल ऑफ एजुकेशनल एंड सोशल रिसर्च में प्रकाशित एक अन्य अध्ययन ने झारखंड में आदिवासी छात्रों की शैक्षिक स्थिति और उपलब्धि का पता लगाया। अध्ययन में पाया गया कि जहां आदिवासी और गैर-आदिवासी छात्रों के बीच शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण असमानताएं थीं, वहीं स्कूल के बुनियादी ढांचे के विकास, छात्रवृत्ति के प्रावधान और शिक्षक प्रशिक्षण जैसे हस्तक्षेप आदिवासी छात्रों के शैक्षिक परिणामों में सुधार कर सकते हैं (राशिद और अंसारी, 2016)। नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग (NCERT) द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट में झारखंड सहित कई राज्यों में आदिवासी बच्चों की शैक्षिक स्थिति और उपलब्धि की जांच की गई। रिपोर्ट में पाया गया कि जहां आदिवासी बच्चों को गरीबी, भेदभाव और शिक्षा तक पहुंच की कमी जैसी विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ा, वहीं स्कूल के बुनियादी ढांचे में सुधार, शिक्षक प्रशिक्षण और सामुदायिक भागीदारी जैसे हस्तक्षेपों से उनकी शैक्षिक उपलब्धि में काफी सुधार हो सकता है (एनसीईआरटी, 2010)।

सुझाव एवं निष्कर्ष : झारखंड के आदिवासी बच्चों में मानसिक स्वास्थ्य और तनाव प्रबंधन में सुधार के विभिन्न तरीके अपनाए जा सकते हैं–

- **मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच में सुधार:** झारखंड के आदिवासी क्षेत्रों में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच बढ़ाने की आवश्यकता है। यह अधिक मानसिक स्वास्थ्य क्लीनिक स्थापित करके और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की पहचान और प्रबंधन के लिए स्वास्थ्य पेशेवरों को प्रशिक्षण प्रदान करके किया जा सकता है।
- **समुदाय स्तर पर जागरूकता:** मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों और तनाव को प्रबंधित करने के तरीके के बारे में जनजातीय समुदायों के बीच जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है। यह स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रमों और जागरूकता अभियानों जैसे समुदाय आधारित हस्तक्षेपों के माध्यम से किया जा सकता है।
- **विद्यालय स्तर पर सहायता:** आदिवासी बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में स्कूल महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। स्कूल परामर्श सेवाओं, सहकर्मी सहायता कार्यक्रमों और अन्य मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन गतिविधियों के माध्यम से सहायता प्रदान कर सकते हैं।
- **गरीबी निवारण** : आदिवासी समुदायों के बीच गरीबी एक प्रमुख तनाव है। आजीविका कार्यक्रमों और वित्तीय सहायता जैसे विभिन्न हस्तक्षेपों के माध्यम से गरीबी को दूर करने से आदिवासी बच्चों के बीच तनाव को कम करने में मदद मिल सकती है।
- **शारीरिक गतिविधि को बढ़ावा:** मानसिक स्वास्थ्य में सुधार और तनाव को कम करने के लिए नियमित शारीरिक गतिविधि को दिखाया गया है। खेल और अन्य गतिविधियों के माध्यम से जनजातीय बच्चों के बीच शारीरिक गतिविधि को बढ़ावा देने से उनके मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद मिल सकती है।
- **परिवारों की भागीदारी** : परिवार बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मानसिक स्वास्थ्य और तनाव प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए हस्तक्षेपों में परिवारों को शामिल करना आदिवासी बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार लाने में प्रभावी हो सकता है।

वहीँ शैक्षिक उपलब्धि में सुधार हेतु निम्नलिखित प्रयास किए जा सकते हैं –

- **शिक्षा तक पहुंच में सुधार:** झारखंड में आदिवासी बच्चों के बीच शैक्षिक उपलब्धि की सबसे बड़ी बाधाओं में से एक शिक्षा तक पहुंच की कमी है। अधिक स्कूलों का निर्माण करके, स्कूलों को परिवहन प्रदान करके और दूरस्थ क्षेत्रों में काम करने के लिए अधिक शिक्षकों की भर्ती करके शिक्षा तक पहुंच में सुधार किया जा सकता है।
- **गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना** : शैक्षिक उपलब्धि में सुधार के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना आवश्यक है। यह शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करके, शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच प्रदान करके और ऐसा पाठ्यक्रम विकसित करके प्राप्त किया जा सकता है जो आदिवासी बच्चों के लिए सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त और प्रासंगिक हो।

- **गरीबी को दूर करना** : गरीबी शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक प्रमुख बाधा है। आजीविका कार्यक्रमों और वित्तीय सहायता जैसे विभिन्न हस्तक्षेपों के माध्यम से गरीबी को दूर करने से आदिवासी बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार करने में मदद मिल सकती है।
- **पोषण संबंधी सहायता प्रदान करना** : झारखंड में आदिवासी बच्चों में कुपोषण एक बड़ी समस्या है, और यह शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। स्कूलों में मध्याह्न भोजन जैसी पोषण संबंधी सहायता प्रदान करने और पूरक आहार वितरित करने से आदिवासी बच्चों के पोषण स्तर में सुधार करने में मदद मिल सकती है।
- **माता-पिता की भागीदारी को बढ़ावा देना:** बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के लिए माता–पिता की भागीदारी महत्वपूर्ण है। स्कूल माता–पिता–शिक्षक बैठकों का आयोजन करके, अपने बच्चे की प्रगति पर नियमित अपडेट प्रदान करके और उन्हें स्कूल की गतिविधियों में शामिल करके अपने बच्चों की शिक्षा में माता–पिता को शामिल कर सकते हैं।
- **शैक्षणिक और सामाजिक विकास में सहयोग:** आदिवासी बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के लिए शैक्षणिक और सामाजिक विकास दोनों का समर्थन करना महत्वपूर्ण है। यह खेल, संगीत और नाटक जैसी पाठ्येतर गतिविधियों के साथ–साथ परामर्श और सलाह कार्यक्रमों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं झारखण्ड राज्य में अनुसूचित जनजाति समुदाय के बच्चों में तनाव एवं मानसिक स्वास्थ की स्थिति चिंताजनक है। विभिन्न शोध एवं प्रतिवेदनों से यह स्पष्ट होता है कि झारखण्ड राज्य में अनुसूचित जनजाति समुदाय के बच्चों की शैक्षिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि पर अधिक से अधिक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। इसके लिए एक तरफ बुनियादी स्तर शिक्षा एवं स्वास्थ सुविधाओं एवं सेवाओं को मजबूत करने की जरुरत है वहीँ दूसरी तरफ विशेष हस्तक्षेपि योजनाओं को सही से लागु किये जाने की आवश्यकता है ।

संदर्भग्रंथ सूचि :

1. Bhowmik, S. K., & Mukherjee, S. (2017). Technology-Enabled Educational Intervention: Impact on Tribal Students' Academic Achievement in Jharkhand, India. International Journal of Education and Development using Information and Communication Technology (IJEDICT), 13(2), 99-118.
2. Jharkhand Tribal Development Society (JTDS). (2018). Tribal development in Jharkhand. Retrieved from http://jtds.nic.in/downloads/annual_report.pdf
3. Khandelwal, S. K., Jhingan, H. P., Ramesh, S., Gupta, R. K., & Srivastava, V. K. (2013). India mental health country profile. International Review of Psychiatry, 25(1), 10-17.
4. Kumar, R., & Kumar, A. (2018). Impact of stress on academic performance of tribal students in Jharkhand, India. Journal of Medical Science and Clinical Research, 6(7), 285-291.
5. Kumar, R., Sharma, M., Singh, A., & Chandra, R. (2017). Association between stress, anxiety, and depression with academic performance among tribal adolescents in Jharkhand, India: A cross-sectional study. Indian Journal of Psychological Medicine, 39(3), 337-341.
6. National Health Mission, Government of Jharkhand. (2018). State health profile Jharkhand. Retrieved from http://www.nrhmjharkhand.org/publication/shp/State_Health_Profile_Jharkhand_2018.pdf

7. NCERT. (2010). Educat ional status of Scheduled Tr ibes in ind ia. Retr ieved from https://www.ncert.n ic. in/pdf/reportstud ies/Educat ional_Status_of_Scheduled_Tr ibes_in_ ind ia.pdf
8. NCPCR. (2019). Mental health of ch ildren in ind ia. Retr ieved from https://ncpcr.gov. in/showf ile.php?lang=1&level=1&subl ink id=1767&l id=1921.
9. Rash id, M., & Ansar i, A. H. (2016). Educat ional Status and Ach ievement of Scheduled Tr ibe Students: A Study on Jharkhand State of ind ia. Journal of Educat ional and Soc ial Research, 6(3), 123-130.